JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वाचिक परंपरा के संदर्भ में, 'दोहे सारे गाँव' का अन्वेषण

डॉ. कुंजीलाल पटेल,
सह प्राध्यापक,
शोध निर्देशक (हिंदी विभाग)
हिंदी अध्ययनशाला एवं शोधकेंद्र,
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखण्ड
विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

अरमान अहमद,
पी.एच.डी. शोधार्थी,
शोधार्थी (हिंदी विभाग),
हिंदी अध्ययनशाला एवं शोधकेंद्र,
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखण्ड
विश्विवद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोध सार

प्रकृति के विभिन्न रहस्य प्राकृतिक आवरणों से ढके रहते हैं। इसी कारण जब सामान्य जन की समझ में कोई बात नहीं आती है तो वह कहते हैं कि इसका रहस्य ईश्वर ही जानता है। ठीक उसी प्रकार लोक मानस के भीतर भी विभिन्न कहावतें, मुहावरे, दोहे, अटका आदि भी अपने मूल रस के साथ छिपी रहती हैं और फिर सही अवसर आने पर वह प्रंसगानुसार बोली और सुनाई जाती हैं। यह कहावतें और दोहे विभिन्न अनुभवों का भण्डार हैं जो हमारे वृद्धजनों और ग्रामीण महिलाओं को चिर स्मृत हैं। वह लोग समय-समय पर लोगों को इन अनुभवों से अवगत कराने के लिए दोहों,कहावतों और मुहावरों का प्रयोग करते हैं। ये कहावतें और दोहे अधिकतर लोक जिव्हा पर विराजमान होती हैं।

लोक साहित्य की परिचयात्मक पुस्तकों का अभाव है। कुछ विद्वान इनके संकलन और प्रकाशन के लिए किटबद्ध हैं जिनके अथक प्रयासों से कुछ पुस्तकों का लोकार्पण हो चुका है। इन्हीं विद्वानों की श्रंखला में एक नाम डॉ. कुंजी लाल पटेल 'मनोहर' जी का भी है जिन्होंने इसी परंपरा की एक धरोहर 'दोहे सारे गाँव' हमें सौगात के रूप में सौंपी है। जिसके लिए लोक साहित्य प्रेमी सदैव उनके आभारी रहेंगे।

बीज शब्द

दोहा, लौकिक साहित्य ,लोकप्रियता

प्रस्तावना

साहित्य की रचना प्रत्येक काल में दो आधारों पर होती रही है। प्रथम शास्त्रीय आधार और दूसरा लौकिक आधार। शास्त्रीय आधार पर रचना विभिन्न शास्त्रीय नियमों और रूढ़ियों का पालन करती है। जबकि लौकिक साहित्य, साहित्यिक रूढ़ियों से मुक्त होता है।

लौकिक साहित्य की रचना भी पद्य और गद्य दोनों रूपों में हुई है। गद्य में लोक कथाएँ और लोक गाथाएँ प्रचलित रहीं तो पद्य में दोहा-चौपाई ,अटका, वुझौवल, लोकगीत आदि प्रचलित रहे। इनमें मनोरंजन की दृष्टि से लोकगीत और उपदेशात्मकता की दृष्टि से दोहे ही अधिक लोकप्रिय रहे। काव्य लेखन की विभिन्न शैलियों में दोहा-चौपाई शैली ही लोकप्रिय रही। इसका पुष्ट प्रमाण गोस्वामी तुलसीदास जी की रामचरित मानस है। रामचरित मानस अपनी सरल भाषा-शैली के कारण बुंदेलखण्ड या भारत में ही नहीं अपितु वैश्विक स्तर पर लोकप्रियता प्राप्त कर चुकी है।

'सोलहवीं सदी में गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरित मानस' बाँदा के पास राजापुर में लिखी। इसी तरह मशहूर कवि केशवदास भी इसी इलाके में पैदा हुए। भूषण, मितराम, नवाज़ और छत्रसाल ने अदब (साहित्य) की बेहद खिदमत अंजाम दी। इस के बाद एक रिवायत बन गई और हिंदी और बुंदेली शोअरा को ये सरज़मीन जनम देती रही।'1

दोहा-चौपाई शैली का आरंभ आदिकाल में हुआ किंतु दोहा छंद के प्रारंभ को लेकर विद्वानों के विभिन्न मत हैं। कुछ विद्वान इसे अपभ्रंश का प्रमुख छंद मानते हैं तो कुछ हिंदी का मुख्य छंद स्वीकार करते हैं। छटी सदी के कवि जोइन्दु (योगीन्द्र) से दोहा छंद का आरंभ माना जाता है। जोइन्दु अपभ्रंश के कवि हैं। हिंदी में दोहा चौपाई शैली का सर्वप्रथम प्रयोग करने का श्रेय सिद्ध सरहपा को दिया जाता है।

'आदिकालीन साहित्य में कथ्य की विविधता के साथ छंद प्रयोग की विविधता भी रही है ।डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने छंद की दृष्टि से कुछ सीमाएँ बनाई हैं।उन्होंने श्लोक को लौकिक संस्कृत का, गाथा को प्राकृत का तथा दोहे को अपभ्रंश का मुख्य छंद स्वीकार किया है। वस्तुतः दोहा छंद अपभ्रंश में जनभाषा से ही गया था, इसलिए इस छंद को हिंदी का मुख्य छंद मानना चाहिए।'2

मनोहर जी द्वारा प्रस्तुत संकलन बुंदेली लोक साहित्य और संस्कृति का अनुपम और अप्रतिम संकलन है।

'दोहे सारे गाँव' यह संकलन जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि इसमें बुंदेलखण्ड के सम्पूर्ण गाँवों के दोहे हैं जो लोक संस्कृति को अपने भीतर संजोये हुए हैं।

मनोहर जी ने अपने संकलन में बुंदेली दोहों को निम्न खण्डों में विभक्त किया है। भक्ति खण्ड, उपदेश खण्ड, स्वास्थ्य खण्ड, कृषि खण्ड, प्रेम संबधी, लोककथा आधारित, बुझौवल या अटका और विविध आदि।

प्रस्तुत संग्रह में 'मनोहर' जी ने बुंदेली लोक साहित्य के दोहे रूपी फूलों को जो यत्र-तत्र बिखरे हुए थे एक गुलदस्ता के रूप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। इसी बात को आचार्य रामचंद्रशुक्ल का निम्न कथन इंगित करता है- 'यदि प्रबंधकाव्य एक विस्तृत वन स्थली है तो मुक्तक एक चुना हुआ गुलदस्ता है ।'3

इस संग्रह के दोहों की विलक्षणता की तुलना यदि बिहारी सतसई के दोहों से की जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। इसके दोहों के महत्व प्रतिपादन हेतु बिहारी सतसई का निम्न दोहा दृष्टव्य है।

सतसैया के दोहरे, ज्यों नाविक के तीर।

देखत में छोटे लगैं, बेधैं सकल शरीर ।।4

इस संकलन का सीमांकन करती हुई निम्न पंक्तियाँ देखें।

भैंस बँधी है ओरछा, पड़ा हुसंगाबाद।

लगबैया है सागरै, चपिया रेवा पार।।5

मैंने दोहे सारे गाँव संकलन का अध्यायवार अध्ययन किया। जिसमें पढ़ते समय पाठक का हृदय रम जाता है और इसे बारंबार पढ़ने की इच्छा मन में जाग्रत होती है।

भक्ति□ संबंधी दोहों में प्रमुख रूप से भगवान राम और श्री कृष्ण से संबंधित दोहों का आधिक्य है।

तुलसी बिरखा बाग के, सींचत में कुमलाँय।

राम भरोसे जे रयें , परवत पै हरयाँय।।6

कृष्ण भक्ति ँ संबधी दोहों में वात्सल्य की छटा और शांत रस का सुंदर मेल देखें।

जसुदा जू के लाडले , देवकी सुत सरकार।

अपने दरसन देओ प्रभु, विनती सौ सौ बार।।7

उपदेश संबंधी दोहों में हर प्रकार से व्यक्ति ँ को उपदेश दिया गया है।यथा लालच, विश्वासघात और भीख माँगने से आदर-सम्मान घटता है।

सीख लीजिये रीत से, कह गये ठीकम ठीक।

खोबै आदर मान को , लोभ दगा और भीक।।8

चतुर शत्रु को मूर्ख मित्र से श्रेष्ठ कहा गया है।

चतुर नर बैरी भलो, मूरख भलो न मीत।

भूल कबहूँ न कीजिए, मूरख जन से प्रीत।।9

मूर्ख की मूर्खता पर तीक्ष्ण व्यंग्य देखिये।

चंदन परो गंवार घर , नित उठ कूटे धान।

रो-रो के चंदन कहै , परो नीच से काम।।10

स्वास्थय संबंधी दोहों में अदरक और सौंफ की विशेषता बताती पंक्तियाँ देखें।

आदे को पानी पियै, सौंप ओई में डार ।

मैदा की ताकत बढ़े, कै गये वैद विचार।।11

नीम की दातुन और निहार मुँह जल पान करने का लाभ निम्न पंक्तियों मे बताया गया है।

नीम दतौने जो करे, सूखी हर्र चबाय।

वासे मौं पानी पिये, उन घर वैद न जाय।।12

कृषि संबंधी पंक्तियाँ जिसमें कृषि के तरीकों को बताया है तो कहीं वर्षा के कृषि पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन है।

सोम शुक्र गुरूवार को , पूस अमावस होय।

घर-घर बजै बधाइयाँ , दुखी रहे न कोय।।13

शुक्रवार की बादरी, छाई सनीचर राय।

तो जा चौकस जानियो, बिन बरसै न जाय।।14

अब बुंदेली बुझौवल देखें-

दस लोगन के बीच में, पकरी गई इक नार।

अपनो काम सटाय कै, पांछ्र डारौ मार।।(रोटी)15

वर माँगन वर लौ गई , वर माँगे कुल दोय।

वर पाँई बेवर भई, कौन त्रिया जा होय।।(कैकई)16

दूसरों को सुख देने से सुख की प्राप्ति होती है और दुख देने से व्यक्ति स्वयं दुखी होता है।

चार वेद छै शास्त्र में, बात मिली कुल दोय।

सुख दीने सुख मिलत है, दुख दीने दुख होय।।17

सच्चे प्रेमी और प्रेमिका का संबध एक जन्म का नहीं बल्कि सात जन्मों का होता है।

सात जनम के हमहुँ तुम, बँधे प्रेम की डोर।

अब सजनीं आकें मिलौ, प्रेम डोर न टोर।।18

इस संसार में हमारे पास जो कुछ भी धन-सम्पदा, मान-मर्यादा, इज्ज़त-प्रतिष्ठा है वह हमारे द्वारा कमाई हुई नहीं बल्कि हमारे पूर्वजों की जमापूँजी है।

अपनौं क्या इस जगत में, सब कुछ मिलो उधार।

पुरखों का लोहा सभी , अपनी केवल धार।।19

लोककवि ईसुरी की फागों का महत्व बताता हुआ निम्न दोहा देखें।

रामायन तुलसी कही, तानसेन ज्यो राग।

सोई इस कलिकाल में, कही ईसुरी फाग।।20

किसी दुखी व्यक्ति के दुख की वेदना उसके मन में ही छिपी रहती है। संसार के लोगों को उसके दुख के साक्ष्य रूप में कोई प्रमाण नहीं दिखता।

नकरी जर केवला भई, केवला जर भई राख।

मैं दुखिया ऐसी जरी, केवला भई न राख।।21

बुंदेलखण्ड के विविध जिलों पर कहा गया दोहा देखिए।

झाँसी गरे की फाँसी, दतिया गरे का हार।

ललितपूर नहीं छोड़िये, जब तक मिले उधार।।22

निष्कर्ष

‘दोहे सारे गाँव’ की भाँति वाचिक परंपरा में प्रचलित और भी लोक साहित्य की विधाओं का संकलन, संरक्षण, संवर्धन और शिक्षण होना चाहिए । साथ ही नई शिक्षा नीति के तहत विलुप्त हो रही लोक साहित्य की विरासत को स्नातक और स्नातकोत्तर के पाठ्यक्रम में अध्ययन और अध्यापन के लिए एक वैकल्पिक क्षेत्रीय विषय के रूप में लागू किया जाना चाहिए। इसे पाठ्यक्रम में समाहित करने से यह हमारी पारिवारिक एवं ग्रामीण लोक संस्कृतियों की अवधारणा के महत्व और उसमें समाहित भावी संभावनाओं को जानने में सहायक होगा।

और इससे क्षेत्रीय विधाओं में शोधकार्य हेतु भी सहायता मिलेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डाँ मुहम्मद इदरीस निज़ामी, सागर कमिश्नरी के अहम उर्दू शोअरा और उनके कलाम का तहकीकी और तनकीदी जाइज़ा, शोध प्रबंध डाँ सर हरि सिंह गौर विश्विद्यालय सागर (म.प्र.) प्रथम संस्करण सन 2000 ई. पृ. क्रं. 23

2. डॉ. नगेन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर बुक्स अंसारी रोड नई दिल्ली, 73वां संस्करण सन 2020, पृ. क्रं. 76

3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, कमल प्रकाशन नई दिल्ली, नवीन संस्करण, पृ. क्रं. 175

4. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, कमल प्रकाशन नई दिल्ली, नवीन संस्करण, पृ. क्रं. 175

5-22 'दोहे सारे गाँव', संपादक एवं प्रकाशक डॉ. कुंजी लाल पटेल 'मनोहर', प्रथम संस्करण सन 2021